Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

A–143

B.A. (Part–I) N.C. Examination, 2022

HINDI LITERATURE

Paper - I

(प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द) :

   (i) पृथ्वीराज रासो की नायिका का नाम लिखिए।

   (ii) 'ढोला मारु रा दूहा' में प्रयुक्त रस का नाम बताइए।

(iii) 'पंजरि' प्रेम प्रकासिया, अंतरि भया उजास।'

मुख कसतूरी महमहीं, बाणी फूटी बास॥

उपर्युक्त पंक्ति में रेखांकित शब्दों के अर्थ लिखिए।

(iv) मलिक मोहम्मद जायसी किस धारा के कवि माने जाते हैं ?

(v) मीरा के गुरु कौन थे ?

(vi) रसखान का मूल नाम क्या था ?

(vii) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आदिकाल का नामकरण क्या किया ?

(viii) हिन्दी साहित्य का स्वर्णिम युग किस काल को माना जाता है ? उसकी समय-सीमा निर्धारित कीजिए।

(ix) माधुर्य गुण की परिभाषा लिखिए।

(x) मानवीकरण अलंकार की परिभाषा देते हुए इसका एक उदाहरण लिखिए।

खण्ड–ब

नोट :– निम्नलिखित व्याख्याओं में से किन्हीं **पाँच** पद्यावतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (उत्तर-सीमा **200** शब्द) :

2. न को हार न जित रहेई न रहहि सूरवर।

धर उप्परु भर परत करत अति जुद्ध महाभर।

कहौं कमध कहौं मथ्य कहौं कर चरन अंतरुरि।

कहौं कंध वहि तेग कहौं सिर जुट्टि फुट्टि उर।

कहौं दन्त मन्त हय षुर कुंभ भ्रसु डह रुंड सब।

हिन्दवान रान भय भाँन मुष महिय तेग चाहुवान जब॥

3. हंसि हंसि कंत न पाइये, जिनि पाँया तिन रोइ।

जो हासे ही हरि मिलै, तो कौन दुहागिन होइ॥

अकथ कहांणी प्रेम की कछू कही न जाइ।

गूँगे केरि सरकारा, बैठे मसकाइ॥

4. जो निज मन परिहरै विकारा।

तौ कत द्वैत-जनित संसृति-दुख, संसय सोक अपारा॥

रघुपति-भगति-बारि छालित चित बिनु प्रयास ही सूझै।

तुलसिदास यह चिद्-विलास जग बूझत-बूझत बूझै॥

5. ऐसी मूढ़ता या मन की।

परिहरि राम-भगाति-सुरसारिता आस करत ओसकन की॥

घूम-समूह निरखि चातक ज्यों, तृषित जानि मति घन की।

नहिं तहँ सीतलता न बारि, पुनि हानि होति लोचन की॥

ज्यों गच-काँच विलोकि सेन जड़ छाँह आपने तन की।

टूटत अति आतुर अहार-बस, छति बिसारि आनन की॥

6. कदली, सीप, भुजंग मुख, स्वाति एक गुन तीन।

जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन॥

कमला थिर नि रहीम कहि, यह जानत सब कोय।

पुरुष पुरातन की बधू, क्यों न चंचला होय॥

अंजन दिया तो किरकिरी, सुरमा दियो न जाय।

जिन आँखिन सों हरि लख्यो, रहिमन बलि बलि जाय॥

7. मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरौ न कोई।

जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई॥

छांडि दई कुल की कानि, कहा करि है कोई।

संतन ढिंग बैठि-बैठि लोकलाज खोई॥

असँवन जल सींचि-सींचि प्रेम-बेल बोई।

अब तो बेल फैलि गई, आणँद फल होई॥

8. अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी।

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग-अँग बास समानी।

प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।

प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।

प्रभु जी तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।

प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा।

खण्ड–स

नोट :– निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द) :

9. ''मध्यकाल के साहित्यिक वातावरण में रहीम अकेले ऐसे कवि हैं, जिन्होंने अलग हटकर व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित उल्लेखनीय संकेत दिये हैं।'' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

10. कबीर की भाषा-शैली की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

11. आदिकाल के नामकरण को स्पष्ट करते हुए उसकी प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

12. अलंकारों का महत्त्व बताते हुए विरोधाभास, मानवीकरण भ्रांतिमान एवं विभावना अलंकार की परिभाषा और उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।